मुर्गियों में शवपरीक्षा/पोस्टमॉर्टम एक अन्यवीरता

मृत्यु के बाद मुर्गी के मृत शरीर की जांच और शरीर के अंदरूनी अंगो की जांच की प्रक्रिया को पोस्टमार्टम कहा जाता है।

शवप्रशिक्षण करने का तरीका

- ✓ सबसे पहले मृतक पक्षी को साबुन के घोल से अच्छी तरह धेना चाहिल ताकि पंखो आदि को आसानी से उतारा और अगर कोई बाहरी पदार्थ इन पंखो के साथ चिपका हो तो उसको भी आसानी से अलग किया जा सके।
- ✓ पक्षी को पीठ के बल लिटाते हुल उसकी छाती को ऊपर की तरफ रखा जाता है और उसके सिर को खुद से दूसरी तरफ दूर रखना चाहिल।
- ✓ ऊपर श्वास प्रणाली के परीक्षण के लिल चोंच के ऊपर के हिस्से को नाक के छिद्र से होते हुल काटना चाहिल और इसके बाद आंखो का किसी भी प्रकार की सोजन, लालिमा और कोई सफेदी इत्यादि के लिल निरीक्षण किया जाता है।
- ✓ मुंह और कंठ.नाल की जांच करने के लिल मुंह को लक तरफ से कैंची के साथ काटा जाना चाहिए।
- ✓ फिर मुंह की तरफ से कंठ.नाल लवं श्वास नली को काटा जाना चाहिल और श्वास नली को लंबाई में काट कर बलगम और खून इत्यादि के अवशेष के लिल देख जाता है।
- ✓ छाती के नीचे की मांसपेशियों का निरीक्षण करने के लिल छाती के ऊपर

की चमड़ी को खींच कर उतारा जाता है।

- ✓फिर टांगो के नीचे हाथ रखते हुल टांगो को इस प्रकार दबाया जाता है कि जांघ की हड्डी का जोड़ टूट जाल और टांगे शरीर से अलग हो जालं। फिर टांगो की चमड़ी उतार कर टांगो का निरीक्षण बिंदी नुमा खून के स्त्राव के लिल किया जाता है।
- ✓छाती की हड्डी के किनारे से शुरू करते दोनों तरफ के पंखो तक पेट की मांसपेशियां काटी जाती है। कंधें के जोड़ को तोड़ कर, छाती की हड्डियों को हटा दिया जाता है।
- ✓झिल्लीदार थैलियों का बलगम आदि की मौजूदगी के लिल निरीक्षण किया जाता है।
- ✓इसके बाद जिगर लवं ताप.तिल्ली का निरीक्षण खून के स्त्राव, सोजिश लवं रंग के बदलाव के लिल किया जाना चाहिए।
- ✓इसके पश्चात् जिगर, दिल और ताप.तिल्ली को शरीर से अलग कर दिया जाना चाहिल ताकि पाचन प्रणाली में अगर कोई गिल्टी, सूजन या फिर रक्त का स्त्राव हो तो उसका आसानी से पता चल सके।
- ✓ पाचन प्रणाली को खोलते हुल सबसे पहले पोटे का निरीक्षण किसी प्रकार के कीड़े की मौजूदगी के लिल किया जाना चाहिए तत्पश्चात् मिहदा नाली का निरीक्षण खून के स्त्राव लवं किसी प्रकार की सफेद तह के लिए किया जाता है।
- ✓ पेट का निरीक्षण किसी किस्म के जख्मों आदि के लिल किया जाना चाहिल।

शवप्रशिक्षण शुरू करने से पहले निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए.

- ✓ **शवप्रशिक्षण** शुरू करने से पहले फार्मर से लिखित निवेदन पत्र जरूर लेना चाहिए।
- ✓ कानूनी केस में स्थानीय पुलिस थाने से निवेदन पत्र अनिवार्य है।
- ✓ **शवप्रशिक्षण** जितनी जल्दी हो सके शुरू कर देना क्योंकि समय के गुजरते ही अंदरूनी अंग गलनें सड़ने शुरू हो जाते हैं।
- ✓ **शवप्रशिक्षण** हमेशा दिन में सूर्य की रोशनी में करना चाहिल ताकि अगर अंगो के रंग में अगर कोई बदलाव हो तो उसे आसानी से पहचाना जा सके। पोस्टमार्टम कभी भी बनावटी लाईट में नहीं करना चाहिए।
- ✓ मुकदमेबाजी आदि से बचने के लिए पोस्टमार्टम हमेशा पोल्ट्री फार्म से दूर और अगर हो सके तो सरकारी जमीन पर किया जाना चाहिए।
- ✓ फार्मर से मौत से पहले के सभी परिस्थितियों की जानकारी, कोई खास लक्षण लवं अगर काई दवाई या इलाज दिया गया हो, के बारे में जानकारी लेनी चाहिए।
- ✓ जानवरों से आदमियों को फैलने वाली बीमारियों से बचने के लिए **शवप्रशिक्षण** के वक्त हमेशा हाथों पर दस्ताने, मुंह पर मास्क लवं पैरों में ऊंचे प्लास्टिक के जूते पहनने चाहिए।

- ✓ **शवप्रशिक्षण** द्वारा नोट किल गल बदलावों को साथ के साथ ही दर्ज करते रहना चाहिए।
- ✓ **शवप्रशिक्षण** के बाद शव को चुना डालकर जमीन में लक गहरे गडढे में दबाना चाहिए या फिर जला देना चाहिल। इन सावधनियों को ध्यान में रखते हुल पोस्टमार्टम की प्रक्रिया क्रमवार निम्नलिखित रूप से करनी चाहिए।

मनदीप सिंह आज़ाद, बनारसी लाल,ललित उपाध्याय,
संजय कौशल, कवरदीप कौर
कृषि विज्ञान केंद्र, रियासी ,जम्मू कश्मीर
शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
जम्मू